JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/1



जो वादी को सिद्ध करने के लिये अभिमत है, वह 'अभिप्रेत' होता है।

**अभेदस्वभाव**

० गुणगुण्याद्येकस्वभावादभेदस्वभावः।

(आ.प. 113)

गुण और गुणी का एक स्वभाव होने से 'अभेदस्वभाव' है।

**अमूर्त**

० जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहि होंति ते मुत्ता।

(पंचा. 89)

जो पदार्थ जीवों के इन्द्रियग्राह्य विषय हैं, वे मूर्त होते हैं।

० रूपादिगुणविरहाद् अमूर्ताः।

(स.सि. 5/39/602)

रूप आदि गुण से रहित होने से (पदार्थ) 'अमूर्त' होते हैं।

**अमूर्तत्व**

० अमूर्तस्य भावोऽमूर्तत्वं रूपादिरहितत्वम्।

(आ.प. 104)

अमूर्त के भाव को अर्थात् स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से रहितपने को 'अमूर्तत्व' कहते हैं।

**अयथार्थ ज्ञान के भेद**

० अयथार्थं च विपर्ययसंशयाऽनध्यवसायाः।

(भि.न्या. 1/11)

अयथार्थ ज्ञान के तीन भेद हैं--विपर्यय, संशय और अनध्यवसाय।

**अयुतसिद्धत्व**

० वैशेषिकशास्त्रे हि प्रसिद्धम्--'अपृथगाश्रय-वृत्तित्वम् अयुतसिद्धत्वम्'।

(आप्त. 44, पृ. 110)

वैशेषिक शास्त्र में प्रसिद्ध है --अपृथक् (रूप से एक) आश्रय में रहना 'अयुतसिद्ध'पना है' (अर्थात् जिन दो पदार्थों) की अभिन्न (यानी एक) आश्रय में वृत्ति, स्थिति होती है, वे 'अयुतसिद्ध' हैं।

**अयुतसिद्धि**

० .....समवर्तित्वलक्षणसमवायभाजाम् अयुतसिद्धि-रेव, न पृथग्भूतत्वम् इति।

(पंचा.त.प्र. 50)

(अनादि-अनन्त) सहवृत्ति होना --यही 'समवाय' है, ऐसा समवाय जिनमें (जैसे--द्रव्य व गुण में) है, वहां उनकी अयुतसिद्धि ही है, अर्थात् उनका कभी भी पार्थक्य नहीं है।

**अयोगव्यवच्छेद**

० विशेषणसंगतैवकारोऽयोगव्यवच्छेदबोधकः। यथा --शंखः पाण्डुर एवेति।
अयोगव्यवच्छेदो नामउद्देश्यतावच्छेदकसमा-नाथ-करणाभावाप्रतियोगित्वम्।

(स.भं.त. 39)

विशेषण से अन्वित एवकार अयोगव्यवच्छेदक होता है। जैसे--शंख पाण्डुर (सफेद) ही होता है। अयोगव्यवच्छेद से तात्पर्य है-- उद्देश्य-तावच्छेदक के समानाधिकरण अभाव का प्रतियोगी न होना।

(द्रष्टव्य : अन्ययोगव्यवच्छेद)

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com